HRA Sazette of India

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) < PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY 71.30/3/98 11.

सं• 101]

नई दिल्ली, मंगलवार, फरवरी 17, 1998/28 माघ, 1919

No. 101] NEW DELHI, TUESDAY, FEBRUARY 17, 1998/28 MAGHA, 1919

जम्मू व कश्मीर कार्य विभाग

अधिसचना

नई दिल्ली, 17 फरवरी, 1998

का.आ. 129 (अ).— जम्मूं व कश्मीर लिब्रेशन फ्रेंट (जिसे इसके बाद इसमें जे॰ के॰ एल॰ एफ॰ कहा गया है) एक ऐसा संगम है जिसका आधार वस्तृत: पाकिस्तान और लंदन में हैं तथा इसके हमदर्द, समर्थक और एजेंट भारत की भूमि पर, विशेषकर जम्मू-कश्मीर में सक्रिय हैं, और

- (1) इसने जम्मू-कश्मीर राज्य को भारत संघ से विलग करने के अपने उद्देश्य की खुलेआम घोषणा की है और इस प्रयोजन की प्राप्ति के लिए—
 - (क) पाकिस्तान की इंटर सिविसेज इन्टेलीजेन्स (आई० एस० आई०) की सहायता से जम्मू व कश्मीर राज्य को स्वतंत्र कराने का लक्ष्य हासिल करने के लिए कश्मीरी युवकों को जुटाकर उन्हें विधि द्वारा स्थापित राज्य सरकार के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष तेज करने के लिए उकसा रहा है तथा भारत की सुरक्षा और प्रादेशिक अखण्डता के प्रतिकृल गतिविधियों में संलिप्त है;
 - (ख) जम्मू-कश्मीर के लोगों को आत्मनिर्णय के अधिकार का आदेश देती रही है तथा 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) को काले दिवस के रूप में मनाने के लिए लोगों का आहवान करता रहा है;
 - (ग) जम्मू व कश्मीर राज्य में निर्वाचन आयोजित कराने का विरोध करके लोगों को अपने लोकतांत्रिक और संवैधानिक अधिकारों का प्रयोग करने में बाधा डाल रहा है (यह ग्रुप आत्मनिर्णय का अधिकार दिए जाने और विभिन्न उग्रवादी संगठनों के बीच एकता स्थापित करने का लगातार प्रयास कर रहा है):
 - (घ) अपनी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए लोगों से बन्द्रक की नोंक पर धन उद्दापित कर रहा है;
 - (इ) भारत में और विदेशों में विरोध करता रहा है और प्रदर्शन आयोजित करता रहा है;

437 GI/98 (1)

- § i i ∮ जम्मू व कश्मीर राज्य को भारत संघ से विलग कराने के अपने प्रयास में यह-
 - §क
 §

 उग्रवादी कियाकलापों में सीलप्त रहा है और इस ग्रुप से भारी मात्रा में शस्त्र
 और गोला बास्द की बरामदी से यह बात सिंद हुई है;
 - हेख इंद और हड्तालों का आह्वान और समर्थन करके सार्वजनिक जीवन में अव्यवस्था फैलाने का प्रयास किया है;
- हैं। ii के जे0के0पल0पफ0 के कार्यकर्ताओं ने दिनांक 24 मार्च, 1996 को इजरत बल दरगाइ को कज़े में लेने का प्रयास किया जिसके परिणामस्वरूप हुई मुठभेड़ में जम्मू और कश्मीर सशस्त्र पुलिस के 5 पुलिस कार्मिक जिसमें एक सब-इंस्पेक्टर भी है, घायल हुए और जे0के0पल0पफ0 के 93 उग्रवादियों की मृत्यु हुई। तत्पश्चात सब-इंस्पेक्टर की घायल होने के कारण मृत्यु हो गई,
- § i l / § जे 0 के 0 पल 0 पफ 0 के कार्यकर्ताओं ने 30 मार्च, 1996 को सुरक्षा बर्ली पर हजरतबल के पास आक्रमण किया जिसमें जे के पल पफ के 22 उग्रवादी मारे गए,
- § 1/६ विनिर्धिष्ट जानकारी के मिलने पर, जम्मू-कश्मीर की पुलिस ने 26 अगस्त, 1997 को मईसुमा, श्रीनगर में जे-के-एल-एफ के कमांडर-इन-चीफ रफीक डार के घर पर छापा मारा। यासीन मिलक ने इस छापे पर आपित की। उसे गिरफ्तार कर लिया गया और बाद में रिष्ठा कर दिया गया। कुछ 50-60 कार्यकर्ताओं ने विरोध में पुलिस पर पत्थर फेंके और स्वतंत्रता के समर्थन में नारे लगाए,
- १।/i) जे0के0एल0एफ0 के अध्यक्ष यासीन मिलक को 12 सितम्बर, 1996 को पुलवामा में पिरफ्तार किया गया, और पुनः 24 सितम्बर, 1996 को डोडा में तब गिरफ्तार किया गया जब वह जम्मू और कश्मीर में निर्वाचन कराने के विरोध में प्रचार कर रहा था,
- § 1/ii है वर्ष 1997 की उत्तरवर्ती छमाही के दौरान सुरक्षा बलों ने जे0के0पल0एफ0 के उग्रवादियों के घरों/छिपने के ठिकानों से भारी मात्रा में हथियार और गोला बारूद बरामद किप,
- १।/iii के जे0के0पल0पफ0 राष्ट्र के हित के प्रतिकूल निम्निलिखत प्रकार की खुली घोषणा करता रहा है और इसकी भारत की अलंडता और सुरक्षा पर गंभीर प्रतिक्रिया हुई है,
 - १क शास अक्तूबर, 1996 में नेशनल कांफ्रेंस की सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर आल पार्टी हुरियत कांफ्रेंस के आह्वान पर "हड़ताल" का पूरी तरह समर्थन करते हुए यासीन मलिक ने प्रेस वक्तव्य में कश्मीर की जनता से "सिविल कर्फ्यू" रखने और विरोध-प्रदर्शन करने की अपील की;
 - ईस ई पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर स्थित जे के पल पफ के अध्यक्ष अमानुत्लाह खान ने 2 जनवरी, 1997 को प्रेस वक्तव्य में, कश्मीर के मुद्दे के बारे में संयुक्त राष्ट्र के दिनांक 5 जनवरी, 1949 के प्रस्ताव को कश्मीर की जनता का अपमान बताया और यह भी कहा कि आत्म निर्णय के अधिकार को सम्मिलित न कर जनता के मूल अधिकार अर्थात आत्म निर्भरता के अधिकार का दमन किया गया है । उन्होंने पूर्ण "हड्ताल" रखकर 5 जनवरी, 1997 को "तीसरा विकल्प दिवस" के रूप में मनाने की भी अपील की;
 - १ँग १ यासीन मिलक ने कलकत्ता में 25 और 26 मई, 1997 को १अल इंडिया पीपुल्स रेजिस्टेंस फोरम बारा आयोजित१ सेमीनार को सम्बोधित करते हुए "कश्मीर की पूर्ण स्वतंत्रता" के लिए सर्घष जारी रखने की घोषणा की;

- १ष१ यासीन मिलक ने जम्मू व कश्मीर लिब्नेशन फ्रांट के केन्द्रीय कार्यालय में 30 और 31 दिसम्बर, 1997 को एक शोक सभा में कहा कि आजादी प्राप्त करने के लिए लोगों को आजादी आंदोलन के प्रति समर्पित हो जाना चाहिए;
- §ड∙§ यासीन मिलक ने 2 जनवरी 1998 को ट्राल में सर्वदलीय हुरियत सम्मेलन के शिष्टमंडल का नेतृत्व किया तथा दरगाह फैज पानोह से निर्वाचन-विरोध अभियान शुरू किया;
- १ च थासीन मिलक ने 10 जनवरी, 1998 को कुल जमात हुरियत कांफ्रेंस १ के जे•एच•सी•१ की बैठक में भाग लिया और 1998 में लोक सभा निर्वाचनों का बहिष्कार करने के. के•जे•एच•सी• के निर्णय का समर्थन किया;
- १ंछ१ जे-के•एल•एफ• ने 21 और 22 जनवरी, 1998 को जम्मू और कश्मीर के लोगों से 26 जनवरी, 1998 को काला दिवस के रूप में मनाने की अपील की;
- §ज§ यासीन मिलक ने 21·1·1998 के इमाम बाह्य बेडगाम में एक बैठक की सम्बोधित करते हुए कहा कि निर्वाचन जनमत संग्रह का विकल्प नहीं हो सकता;

और केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि पूर्वीक्त कारणों से जे०के०एल०एफ० §जिसके अंतर्गत भारत के भीतर तथा विदेश में सिक्य, उसके सदस्य, कार्यकर्ता, सशस्त्र ग्रंप हमदर्घ तथा स्वयंभू नेता हैंं इं एक विधि विरुद्ध संगम है,

अतः, केन्द्रीय सरकार, विधि विरुद्ध क्रियाकलाप शिनवारण शिधिनियम, 1967 १ 1967 का 37 की धारा 3 की उप-धारा १ १ वारा प्रवत्त शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, जम्मू-कश्मीर तिबेशन फ्रंट १ जे 0 के 0 एल 0 एफ 0 शिजिसके अंतर्गत भारत के भीतर तथा विदेश में सिक्रय, उसके सदस्य, कार्यकर्ता, सशस्त्र ग्रुप, हमवर्ष तथा स्वयंभू नेता हैं, को एक विधि विरुद्ध संगम घोषित करती है,

और केन्द्रीय सरकार की यह भी राय है कि सुरक्षा बलों पर अपने सशस्त्र ग्रुपों दारा बिलग होने के उव्देश्य से लगातार किए जा रहे किन्याकलापों और हिंसा की बार-बार की जा रही कार्रवाईयों और आक्रमणों के कारण, जे0के0पल0पफ0 को तत्काल प्रभाव से विधि विरुद्ध संगम योषित करना आवश्यक है.

अतः, केन्द्रीय सरकार, उक्त घारा की उप-धारा § 3 के परंतुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए आगे यह निदेश देती है कि यह अधिसूचना किसी ऐसे आदेश के अधीन रहते हुए, जो उक्त अधिनियम की धारा 4 के अधीन किया जाए, राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रभावी होगी।

DEPARTMENT OF JAMMU & KASHMIR AFFAIRS NOTIFICATION

New Delhi, the 17th February, 1998

S.O. 129 (E):— .Whereas the Jammu and Kashmir Liberation Front (hereinafter referred to as JKLF) is an association actually based in Pakistan and London and having sympathisers, supporters and agents on Indian soil, especially in Jammu and Kashmir, and

- (i) it has openly declared as its aim, secession of the State of Jammu and Kashmir from the Union of India, and to achieve this purpose -
 - (a) has been mobilising Kashmiri youth with the help of Pak Inter-Services Intelligence, exhorting them to intensify the armed struggle against the State Government established by law to achieve liberation of the State of Jammu and Kashmir and indulging in activities prejudicial to the security and territorial integrity of India;
 - (b) has been preaching right of self-determination for the people of Jammu and Kashmir and has been giving calls to the people to observe 15th day of August (Independence Day) as a Black Day;
 - (c) has been opposing holding of elections in the State of Jammu and Kashmir thereby obstructing people from exercising their democratic and constitutional rights (the group has continued to advocate granting of self-determination and unity amongst various militant outfits);

- (d) has been extorting money from the people at gun point to meet its requirements;
- (a) has been holding protests and demonstrations in India and abroad;
- (ii) it has, in its attempt to cause secession of the State of Jammu and Kashmir from the Union of India -
 - (a) indulged in militant activities as endorsed by the recovery of large quantities of arm and ammunition from the group;
 - (b) tried to create public disorder by giving and supporting calls for Bandhs and Strikes;
- (iii) the activists of JKLF attempted to seize the Hazratbal Shrine on the 24th March, 1996, which led to encounter in which 5 Jammu & Kashmir Armed Police personnel including a Sub-inspector were injured and 9 JKLF militants were killed. The Sub-inspector later succumbed to his injuries.
- (iv) the activists of JKLF attacked the seurity forces near Hazratbal on the 30th March, 1996, in which 22 JKLF militants were killed.
- (v) on a specific information, the J&K Police raided the house of JKLF Commander-in-Chied Rafiq Dar at Maisuma, Srinagar on the 26th August, 1997. Yasin Malik objected to the raid. He was picked up and later released. Some 50-60 activists pelted stones at the police in protest and raised pro-Independence slogans.

- (vi) Yasin Malik, President of JKLF was arrested in Pulwama on the 12th September 1996 and again in Doda on the 24th September, 1996 while campaigning against the holding of elections in Jammu and Kashmir.
- (vii) during the second half of the year 1997, the security forces recovered large quantities of arms and ammunition from the houses and hideouts of JKLF militants.
- (viii) the JKLF has been making open pronouncements prejudicial to the interest of the nation and having serious repercussions for the integrity and security of India, such as the following:
 - Yasin Malik, in a press statement, while fully supporting the 'hartal' call given by the All Party Hurriyat Conference on the occasion of swearing-in-ceremony of the National Conference Government in the month of October 1996, appealed to the people of Kashmir to observe "Civil Curfew" and hold protests:
 - Amanullah Khan, Pakistan Occupied Kashmir--based (b) Chairman of JKLF, in a press statement on the 2nd January, 1997, described the UN resolution dated the 5th January, 1949, regarding Kashmir issue, as an insult to the people of Kashmir and added by excluding that the right self-determination, the people's basic right, i.e., the right of self-dependence has been crushed. He further appealed to observe the 5th January 1997 as 'third option day' by observing complete 'hartal':

- (c) Yasin Malik, while addressing a seminar (organised by the All India Peoples Resistance Forum) on the 25th and 26th May, 1997 in Calcutta declared to continue the struggle for 'total freedom of Kashmir';
- (d) Yasin Malik stated in a condolence meeting at the Central Office of JKLF on the 30th and 31st December, 1997, that people should devote towards the freedom movement to achieve freedom:
- (e) Yasin Malik led a delegation of All Party
 Hurriyat Conference on the 2nd January, 1998 in
 Tral and launched anti-election campain from
 Dargah Faiz Panch:
- (f) Yasin Malik attended meeting of Kul Jamat Hurriyat Conference(KJHC) on the 10th January, 1998 and supported KJHC decision to boycott the Lok Sabha Elections 1998;
- (g) JKLF appealed to the people of Jammu and Kashmir, on the 21st and 22nd January, 1998, to observe the 26th January 1998 as a black day:
- (h) Yasin Malik, while addressing a meeting on the 21st January, 1998 at Imam Bora, Badgam, stated that elections cannot be a sustitute to plebiscite.

And whereas the Central Government is of the opinion that for the aforesaid reasons the JKLF (including its members, activists, armed groups, sympathisers and self styled leaders, operating inside India and abroad) is an unlawful association:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 3 of the Unlawful Activities (Prevention) Act, 1967 (37 of 1967), the Central Government hereby declares the Jammu and Kashmir Liberation Front(JKLF), including its members, activists, armed groups, sympathisers and self styled leaders operating inside India and abroad to be an unlawful association.

And whereas the Central Government is further of the opinion that because of its continued activities aimed at secession and the repeated acts of violence and attacks by its armed groups on the security forces, it is necessary to declare the JKLF to be unlawful association with immediate effect;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the previso to sub-section (3) of the said section, the Central Government directs that this notification shall, subject to any order that may be made under section 4 of the said Act, have effect from the date of its publication in the Official Gazette.

[F. No. 13014/10/97-K (DO. I)] SUDHIR S. BLOERIA, Jt. Secy.